आकार IAS

Shaping Your Dreams

मध्यप्रदेश का भूगोल

मुख्य परीक्षा

प्रश्नपत्र-01 | भाग-02 | इकाई-03

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)

aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com

9713300123, 6262856797, 6262856798

प्रश्न पत्र - 01

भूगोल
GEOGRAPHY

❒ **भाग-2**

इकाई - 3 : मध्य प्रदेश का भूगोल

- प्रमुख भू-आकारिकी (Geommorphic) प्रदेश - नर्मदा घाटी एवं मालवा पठार के विशेष संदर्भ में।
- प्राकृतिक वनस्पति एवं जलवायु।
- **मृदा** - मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुण मृदा प्रसंस्करण एवं मृदा निर्माण, मृदा क्षरण व ह्रास की समस्याएँ। समस्याग्रस्त मृदा एवं उसके परिष्कार के तरीके। जलग्रहण आधार पर मृदा संरक्षण नियोजन।
- **खनिज एवं ऊर्जा संसाधन** - प्रकार, वितरण एवं उपयोग।
- **प्रमुख उद्योग** - कृषि उत्पाद, वन एवं खनिज आधारित उद्योग।
- **राज्य की जनजातियाँ** - आपतग्रस्त जनजातियों के विशिष्ट संदर्भ में।

❒ **Part-2**

UNIT - III : Geography of Madhya Pradesh

- Major Geomorphic Regions with special reference to Narmada Valley and Malwa Plateau.
- Natural vegetation and climate.
- **Soil -** Physical, chemical and biological properties of soil, soil formation process, problems of soil erosion and soil degradation, problem soil and methods of its reclaimation, soil conservation planning on watershed basis.
- **Mineral and Energy Resources -** Types, distribution and uses.
- **Major Industries -** Based on agricultural produce, forests and minerals.
- The Tribes of State with particular reference to vulnerable tribes.

परीक्षा योजना

सामान्य अध्ययन के प्रथम प्रश्न-पत्र के भाग-II की इकाई-III का **पूर्णांक 30** है

इकाई	प्रश्न	संख्या	x	अंक	=	कुल अंक	आदर्श शब्द सीमा
इकाई-3	अति लघु उत्तरीय	03	x	03	=	09	10 शब्द या 01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द या 05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	11	=	11	200 शब्द

विषय सूची (CONTENTS)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	मध्य प्रदेश की भू-गर्भिक संरचना	01 - 03
02	मध्य प्रदेश के प्रमुख पर्वत	04 - 05
03	मध्य प्रदेश का भौतिक भूगोल	06 - 15
04	मध्य प्रदेश की जलवायु	16 - 19
05	मध्य प्रदेश में मृदा का वर्गीकरण तथा वितरण	20 - 33
06	मध्य प्रदेश में वन सम्पदा	34 - 39
07	मध्य प्रदेश के खनिज संसाधन	40 - 48
08	मध्य प्रदेश में ऊर्जा संसाधन	49 - 59
09	मध्य प्रदेश के कृषि-जलवायु क्षेत्र	60 - 62
10	मध्य प्रदेश में कृषि	63 - 71
11	मध्य प्रदेश में सिंचाई एवं नदी घाटी परियोजनाएं	72 - 77
12	मध्य प्रदेश में उद्योग	78 - 89
13	मध्य प्रदेश में परिवहन	90 - 96
14	मध्य प्रदेश की जनसंख्या	97 - 102
15	मध्य प्रदेश की जनजातियां	103 - 115
16	मध्य प्रदेश की नदियां	116 - 121
17	मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य	122 - 126
18	मध्य प्रदेश में पर्यटन	127 - 135

मध्य प्रदेश की भू-गर्भिक संरचना
(Geological Structure of Madhya Pradesh)

मध्य प्रदेश प्रायद्वीपीय पठार के उत्तरी भाग में स्थित एक प्रमुख राज्य है। भारत के मध्य भाग में स्थित इसे भारत का हृदय स्थल भी कहा जाता है। यहां पर्वत, पठार, मैदान एवं नदियां सभी प्रकार की भौगोलिक संरचनाएं विद्यमान है। भू-वैज्ञानिक दृष्टि से यह प्राचीन गोण्डवानालैण्ड का भाग है।

किसी भी स्थान की भू-आकृति उसकी भू-गर्भिक संरचना उसके निर्माण की प्रक्रिया एवं विकास की विभिन्न अवस्थाओं का परिणाम होती है। भू-गर्भिक संरचना के अध्ययन से ही किसी स्थान विशेष पर पाई जाने वाली चट्टानों की संरचना और संघटन की जानकारी प्राप्त होती है। इसके आधार पर मिट्टी की विशेषताओं और खनिजों की उपलब्धता का निर्धारण होता है।

मध्य प्रदेश की भू-गर्भिक संरचना का विभाजन

- आर्कियन समूह
- कुडप्पा क्रम
- गोण्डवाना क्रम
- दक्कन ट्रेप
- धारवाड़ क्रम
- विन्ध्यन क्रम
- क्वार्टनरी क्रम

❐ आर्कियन समूह की चट्टानें

- **निर्माण** – ये सर्वाधिक प्राचीन एवं प्राथमिक चट्टानें कहलाती हैं, जो ज्वालामुखी निर्मित चट्टानें होती हैं।
- **क्षेत्र** – मध्य प्रदेश के उत्तर व उत्तर-पश्चिम तथा पूर्वी भाग में आर्कियन चट्टानों का विस्तार है।
- **खनिज** – इन चट्टानों में मुख्यरूप से ग्रेनाइट, पार्नोकाइट, शिष्ट, नीस आदि खनिज पाए जाते हैं।
- **कालक्रम** – प्री-कैम्ब्रियन युग में।
- **विशेषताएं** – ये चट्टानें मुख्यरूप से जीवहीन एवं जीवाश्मरहित होती हैं।
  – ये चट्टानें अत्यधिक आकुंचित होती है, क्योंकि ये भ्रंशित एवं शल्कित अवस्था में होती है।
  – इसकी संरचना शल्कित पट्टी रूप में पाई जाती है।
  – ये चट्टानें खनिज सम्पदा की दृष्टि से भारत की सबसे समृद्ध चट्टानें हैं।
  – इसमें धात्विक, अधात्विक खनिजों के अतिरिक्त ताँबा, मैंगनीज, लोहा आदि निक्षेप पाए जाते हैं।

❐ धारवाड़ क्रम की चट्टानें

- **निर्माण** – धारवाड़ क्रम की चट्टानों का निर्माण आर्कियन क्रम की चट्टानों के अनाच्छादन और अपरदन के फलस्वरूप हुआ है।
- **क्षेत्र** – मध्य प्रदेश के जबलपुर, बालाघाट, छिंदवाड़ा आदि जिलों में चट्टानों का विस्तार है।
- **खनिज** – इन चट्टानों में स्लेट, शिष्ट, नीस, ग्रेनाइट, फाइलाइट, क्वार्ट्जाइट आदि खनिज पाए जाते हैं।
- **विभाजन** – धारवाड़ क्रम की चट्टानों को 03 भागों – चिल्पी क्रम, सकोली क्रम एवं सौसर क्रम की चट्टानों में विभाजित किया जाता है।

1) **चिल्पी क्रम** – इसका विस्तार मध्य प्रदेश के बालाघाट, जबलपुर, छिंदवाड़ा जिलों में पाया जाता है। इसमें ताँबा, मैंगनीज आदि खनिज प्राप्त होते हैं।

2) **सकोली क्रम** – इन चट्टनों का विस्तार मुख्यरूप से जबलपुर जिले में है। इसमें अभ्रक, शिष्ट, डोलामाइट, संगमरमर आदि के निक्षेप पाए जाते हैं।

3) **सौसर क्रम** – इन चट्टानों का विस्तार महाराष्ट्र के नागपुर से मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा तक एक लम्बी पट्टी के रूप में है। इसमें अभ्रक, शिष्ट, संगमरमर, क्वार्टजाइट, मैंगनीज आदि की अधिकता होती है।

❐ कुड़प्पा क्रम की चट्टानें

- **निर्माण** – धारवाड़ क्रम की चट्टानों के अपक्षय एवं अपरदन से निर्मित होती है। (मूल स्वरूप अवसादी चट्टानों का)
- **क्षेत्र** – इस क्रम की चट्टानें पन्ना, छतरपुर, ग्वालियर आदि जिलों में पाई जाती हैं।
- **खनिज** – इन चट्टानें में मुख्यूरप से शैल, क्वार्ट्जाइट, स्लेट, चूना–पत्थर, बलुआ पत्थर, हीरा आदि खनिज मिलते हैं।
- **विभाजन** – मध्य प्रदेश में कुड़प्पा क्रम की चट्टानों के 2 उपक्रम – बिजावर एवं ग्वालियर प्राप्त होते हैं।

1) **बिजावर उपक्रम** – बिजावर उपक्रम निचले कुड़प्पा की ऊपरी सतह का नाम है। इस सीरिज में चुना–पत्थर, सफेद पत्थर, बलुआ पत्थर, हेमेटाइट, हीरा आदि खनिज प्राप्त होते हैं। यह श्रेणी पन्ना, सतना, रीवा, कटनी, छतरपुर तक विस्तृत है। इन चट्टनों के आधार में बलुआ पत्थर एवं क्वार्ट्जाइट चट्टानों का निक्षेपण है।

2) **ग्वालियर उपक्रम** – ग्वालियर उपक्रम की चट्टानें ग्वालियर के निकट पाई जाती हैं। इसमें बलुआ पत्थर, शैल, क्वार्ट्जाइट, चूना–पत्थर, बेसाल्ट लावा की चट्टानों के निक्षेप पाए जाते हैं। इस उपक्रम की ऊपरी चट्टानों को मोराट तथा निचली चट्टानों को पार कहते हैं।

❐ विन्ध्यन क्रम की चट्टानें

- **निर्माण** – कुड़प्पा क्रम की चट्टानों के अपक्षय एवं अपरदन से इनका निर्माण होता है।
- **क्षेत्र** – मध्य प्रदेश में विन्ध्यन क्रम की चट्टानों का सर्वाधिक विस्तार नर्मदा नदी के उत्तर में पाया जाता है।
- **खनिज** – इस क्रम की चट्टानों में बलुआ पत्थर, शैल, चूना–पत्थर, सीमेंट, शीशा आदि खनिज पाए जाते हैं।
- **विभाजन** – विन्ध्यन क्रम की चट्टानओं को मुख्यत: 02 भागों में निचला विन्ध्यन क्रम/सेमरी उपक्रम तथा ऊपरी विन्ध्यन क्रम में विभाजित किया जाता है। ऊपरी विन्ध्यन क्रम के भी 03 भाग कैमूर उपक्रम, रीवा उपक्रम एवं भाण्डेर उपक्रम में विभाजित किया जाता है।

1) **सेमरी उपक्रम** – इसका अधिकांश विस्तार मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्व में सोन नदी घाटी में हुआ है। इस क्षेत्र में बलुआ पत्थर, चूना–पत्थर, शैल आदि के निक्षेप पाए जाते हैं। इसमें वलय और भ्रंश अधिका पाए जाते हैं। दमोह और सागर जिलों के दक्षिण में विस्तृत क्षेत्रों में गुम्बदाकार उच्च भूमिया एवं घाटियां पाई जाती हैं।

2) **ऊपरी विन्ध्यन क्रम** – इनका विकास निचले विन्ध्यन क्रम की चट्टानों के बाद हुआ। इनाका निर्माण ज्वारनदमुख तथा नदियों की घाटियों में हुआ है।

a) **कैमूर उपक्रम** – मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश में विस्तृत है। सर्वाधिक विकास बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड में हुआ।

b) **रीवा उपक्रम** – इसका विस्तार उत्तर–पश्चिम में सागर, पन्ना, दमोह आदि जिलो में है। इनका रंग गुलाबी एवं बैंगनी होता है।

c) **भाण्डेर उपक्रम** – इसका विस्तार सतना, सागर, दमोह में प्राप्त होती है। इसमें चूना–पत्थर, बलुआ पत्थर आदि पाए जाते हैं।

➢ **विशेषताएं** – विन्ध्यन पर्वत श्रृंखला उत्तर के मैदानी तथा प्रायद्वीपीय भागों के मध्य विभाजक का कार्य करती है, जिसकी सबसे ऊँची चोटी सद्भावना (752 मीटर) है।

– इन चट्टानों के पत्थरों का रंग लाल होता है, जिनसे अनेक ऐतिहासिक भवनों का निर्माण हुआ है।

– ये चट्टानें सामान्यत: जीवाश्मविहीन होती हैं।

– विन्ध्यन पर्वत एवं अरावली पर्वत श्रृंखला के मध्य 800 किमी लम्बा ग्रेट बाउण्ड्री भ्रंश स्थित है।

– इसमें धात्विक, अधात्विक खनिजों के अतिरिक्त ताँबा, मैंगनीज, लोहा आदि निक्षेप पाए जाते हैं।

❖ **जबलपुर उपक्रम**

इस उपक्रम का विकास मध्य प्रदेश के कटनी तथा जबलपुर के क्षेत्रों में हुआ है। इस उपक्रम में जुर्रेसिक काल की वनस्पतियों के अवशेष पाए जाते हैं। इस क्षेत्र में लिग्नाइट कोयले के साथ-साथ कांग्लोमरेट, चूना-पत्थर, बलुआ पत्थर आदि निक्षेप पाए जाते हैं।

❒ दक्कन ट्रैप की चट्टानें

➢ **निर्माण** – ये ज्वालामुखी निर्मित चट्टानें होती हैं।

➢ **काल** – क्रिटेशियस काल में निर्मित होती है।

➢ **खनिज** – काली मृदा, भूरी मृदा, लाल मृदा का निर्माण होता है। चूना पत्थर, खनिज प्राप्त होता है।

➢ **विशेषताएं** – ट्रैप का शाब्दिक अर्थ सौवाना या कदम होता है।

– इसके लावा निर्मित संरचना में सल्फर की मात्रा सर्वाधिक होती है।

– यह 3 भागों में विभाजित होती है – निचला, मध्यवर्ती तथा ऊपरी ट्रैप।

– सामान्यत: यह एक आग्नेय चट्टानें हैं।

❒ क्वार्टनरी क्रम की चट्टानें

➢ **निर्माण** – प्लायोसीन काल के बाद निर्मित चट्टानें हैं।

➢ **काल** – मध्य प्रदेश में इसका विस्तार ताप्ती, नर्मदा तथा चम्बल आदि नदी घाटियों के क्षेत्रों में हुआ।

➢ **खनिज** – नाममात्र के खनिजों की प्राप्ति होती है।

➢ **प्रमुख** – इसे नवीन जलोढ़ भी कहते हैं।

मध्य प्रदेश के प्रमुख पर्वत
(Mountains in Madhya Pradesh)

पर्वत प्रमुख रूप से धरातल के **सबसे ऊँचे स्थल** भाग हैं। ये अपने आस-पास के क्षेत्रों से ऊँचाई पर होते हैं। आधार की अपेक्षा इनका शीर्ष क्षेत्र छोटा तथा तीव्र ढाल युक्त होता है। समतल भूमि से इनका ढाल कोण प्राय: **6° से 35°** होता है। ये अपनी ऊँचाई, ढाल और संकीर्ण शीर्ष के द्वारा ही मैदानों एवं पठारों से भिन्न होते हैं।

पर्वत, भू-तल पर **द्वितीय श्रेणी** के महत्वपूर्ण उच्चावच्च होते हैं। पर्वत उस श्रेणी अथवा उच्च स्थान को कहते हैं, जिसका ढाल तीव्र हो तथा वह अपने समीपवर्ती क्षेत्र से अधिक ऊँचा हो (कम से कम 500 मीटर) तथा उसका शिखर क्षेत्र पठार के विपरीत संकुचित हो। मध्य प्रदेश में मुख्यरूप से 02 पर्वत श्रेणियां विद्यमान है -

1) विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी
2) सतपुड़ा पर्वत श्रेणी

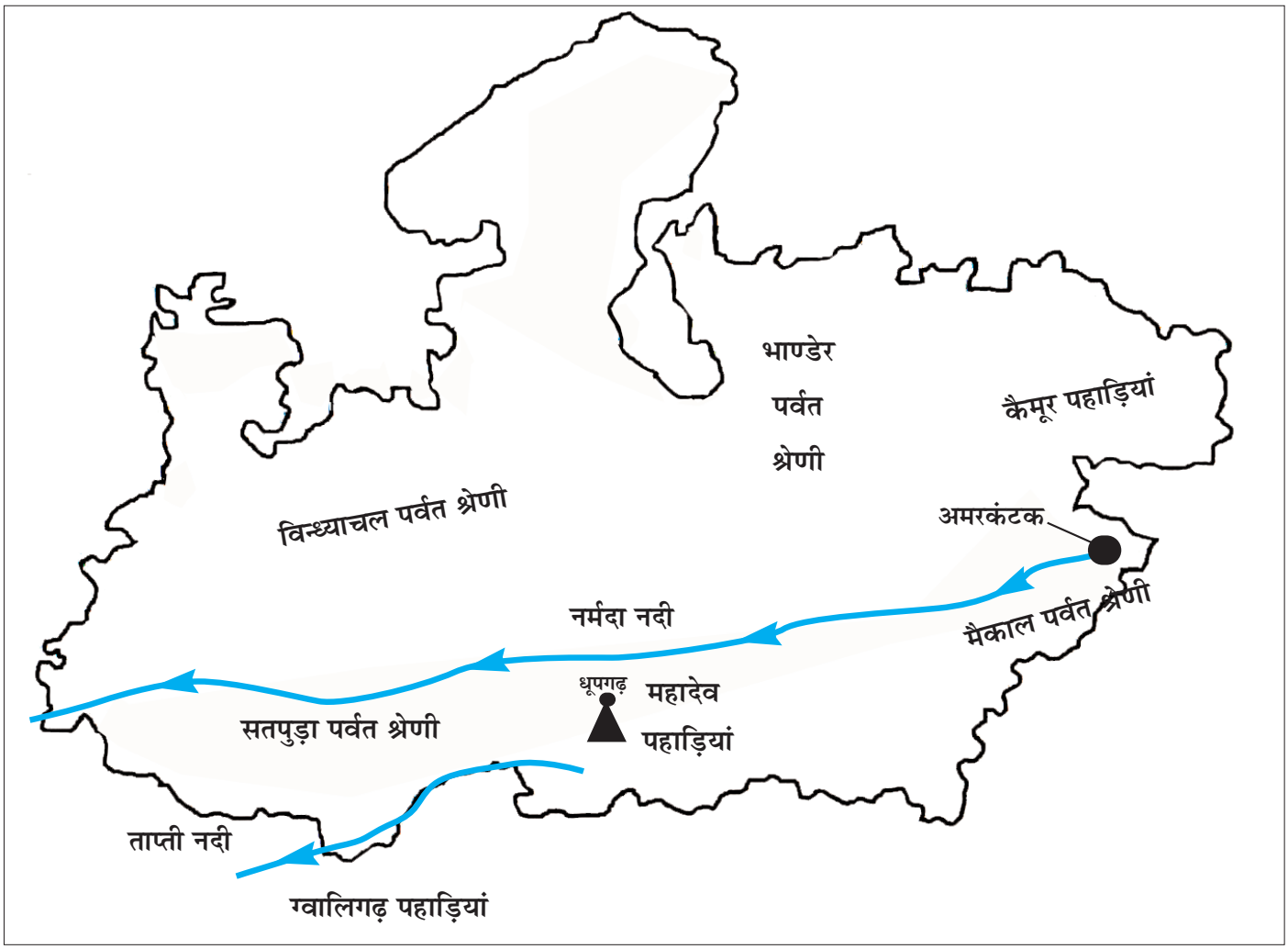

❖ विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी

यह नर्मदा के उत्तर में उसके समानान्तर स्थित है। इन पर्वतों का निर्माण क्वार्ट्ज एवं बलुआ पत्थरों से हुआ है। विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी पश्चिम से पूर्व की ओर भाण्डेर, कैमूर एवं पारसनाथ की पहाड़ियों के रूप में गुजरात से लेकर झारखण्ड तक विस्तृत है। इसे अवशिष्ट पर्वत कहा जाता है। यह पर्वत श्रेणी उत्तर भारत को दक्षिण भारत से अलग करती है। यह मध्य प्रदेश की सबसे प्राचीन पर्वत श्रेणी होने के साथ ही विश्व की सर्वाधिक प्राचीनतम पर्वत श्रेणियों में से एक है। यह हिमालय पर्वत से भी अधिक प्राचीन है।

विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी सद्भावना शिखर (गुडविल) है, जो दमोह में स्थित है। गुडविल शिखर को कलुमार अथवा कालुम्बे शिखर के नाम से भी जाना जाता है। इस पर्वत श्रेणी की उप-श्रेणियों में भाण्डेर तथा कैमूर प्रमुख है -

1) **भाण्डेर श्रेणी** - यह विन्ध्याचल का पूर्वी विस्तार है। विन्ध्य की भाण्डेर श्रेणी का विस्तार मध्य प्रदेश के छतरपुर दमोह व पन्ना जिले में है।

2) **कैमूर श्रेणी** - कैमूर पहाड़ियां विन्ध्य पर्वत श्रेणी का पूर्वी हिस्सा है। यह मध्य प्रदेश के कटनी, सतना, रीवा, सीधी एवं सिंगरौली से होते हुए झारखण्ड तक फैला है। कैमूर भाण्डेर श्रेणी सोन एवं यमुना नदी के जल को विभक्त करती है।

❖ सतपुड़ा पर्वत श्रेणी

सतपुड़ा पर्वत श्रेणी मुख्यत: ग्रेनाइट एवं बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित है। यह एक ब्लॉक पर्वत है, जिसके उत्तर में नर्मदा की दरार घाटी एवं दक्षिण में ताप्ती की दरार घाटी स्थित है। सतपुड़ा श्रेणी नर्मदा एवं गोदावरी के मध्य जल द्विभाजक है। सतपुड़ा पर्वत श्रेणी की सर्वाधिक ऊँची चोटी धूपगढ़ (1350 मी, पचमढ़ी) है, जो कि महादेव पहाड़ियों में स्थित है। धूपगढ़ मध्य प्रदेश की भी सबसे ऊँची चोटी है। इसके 03 उप-विभाजन है -

1) **राजपीपला श्रेणी** - यह संकरी, टेढ़ी-मेढ़ी, प्रपाती ढलान वाली श्रेणी है, जो गुजरात (राजपीपला) तथा मध्य प्रदेश की पश्चिमी सीमा से बुरहानपुर दर्रे तक आती है। इसके तहत् पश्चिम में राजपीपला की पहाड़ियां (गुजरात), अखरानी की पहाड़ियां, बड़वानी की पहाड़ियां, बीजागढ़ की पहाड़ियां तथा असीरगढ़ की पहाड़ियां आती हैं।

2) **मध्य सतपुड़ा श्रेणी** - मध्य श्रेणी के नाम से पहचाने जाने वाला यह हिस्सा राजपीपला के पूर्व में एक चौड़ी श्रेणी है। इसकी मुख्य उप-श्रेणियों में ग्वालिगढ़ तथा महादेव की श्रेणियां हैं। महादेव श्रेणी होशंगाबाद, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर एवं सिवनी जिले में है। ताप्ती नदी के दक्षिण में ग्वालिगढ़ की श्रेणी स्थित है। ताप्ती नदी का उद्गम सतपुड़ा श्रेणी से हुआ है।

3) **मैकाल श्रेणी** - यह सतपुड़ा का सबसे पूर्वी भाग है, जो मध्य प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित है। यह अर्द्धचन्द्रकार भाग है। यह प्रदेश के बालाघाट, मण्डला, डिण्डोरी एवं अनूपपुर जिलों के अलावा छत्तीसगढ़ में फैली है। अमरकंटक की पहाड़ी इसी भाग में है। अमरकंटक से 03 नदियों नर्मदा, सोन एवं जोहिला का उद्गम होता है।

नोट - अमरकंटक को सतपुड़ा पर्वत तथा विन्ध्याचल पर्वत के मिलन का संधि स्थल माना जाता है।

मध्य प्रदेश का भौतिक भूगोल
(Physical Geography of Madhya Pradesh)

भारत के मध्य में स्थित मध्य प्रदेश गोंडवानालैण्ड का भाग है, जिसका भौगोलिक विस्तार 21°6‘ उत्तरी आक्षांश से 26°30‘ उत्तरी आक्षांश तक तथा 74°9‘ पूर्वी देशान्तर से 82°48‘ पूर्वी देशान्तर तक है। कर्क रेखा मध्य प्रदेश के मध्य से होकर गुजरती है। मध्य प्रदेश भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। मध्य प्रदेश का क्षेत्रफल 30,8252 वर्ग किलोमीटर है, जो देश के कुल क्षेत्रफल का 9.38 प्रतिशत है। मध्य प्रदेश की उत्तर से दक्षिण तक लम्बाई 605 किमी है, जबकि पूर्व से पश्चिम की लम्बाई लगभग 870 किमी है। मध्य प्रदेश का वर्तमान नामकरण भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा किया गया है। विभिन्न विशेषताओं एवं विविधता से युक्त मध्य प्रदेश कई अन्य नामों, जैसे – हृदय प्रदेश, सोया प्रदेश, नदियों का माइका, टाइगर स्टेट आदि से जाना जाता है।

मध्य प्रदेश एक स्थल अवरूद्ध राज्य है, जिसके उत्तर में उत्तर प्रदेश, पूर्व में छत्तीसगढ़, पश्चिम में राजस्थान व गुजरात तथा दक्षिण में महाराष्ट्र है, जिसमें से सर्वाधिक भौगोलिक सीमा राजस्थान तथा न्यूनतम गुजरात के साथ है। मध्य प्रदेश की सबसी उत्तरी सीमा पर मुरैना, दक्षिण सीमा पर बुरहानपुर, पूर्वी सीमा पर सिंगरौली तथा पश्चिमी सीमा पर अलीराजपुर जिला स्थित है।

यदि भौगोलिक दृष्टिकोण देखा जाए, तो मध्य प्रदेश के पूर्व में छत्तीसगढ़ का मैदान, पश्चिम में अरावली की पर्वत श्रेणियां, उत्तर में गंगा-यमुना का मैदान तथा दक्षिण में ताप्ती नदी घाटी एवं महाराष्ट्र का पठार स्थित है। पृथ्वी का केन्द्र बिन्दु मंगलनाथ (उज्जैन) तथा वर्तमान भारत का केन्द्र बिन्दु विदिशा एवं मध्य प्रदेश का केन्द्र बिन्दु सागर मध्य प्रदेश में ही स्थित है।

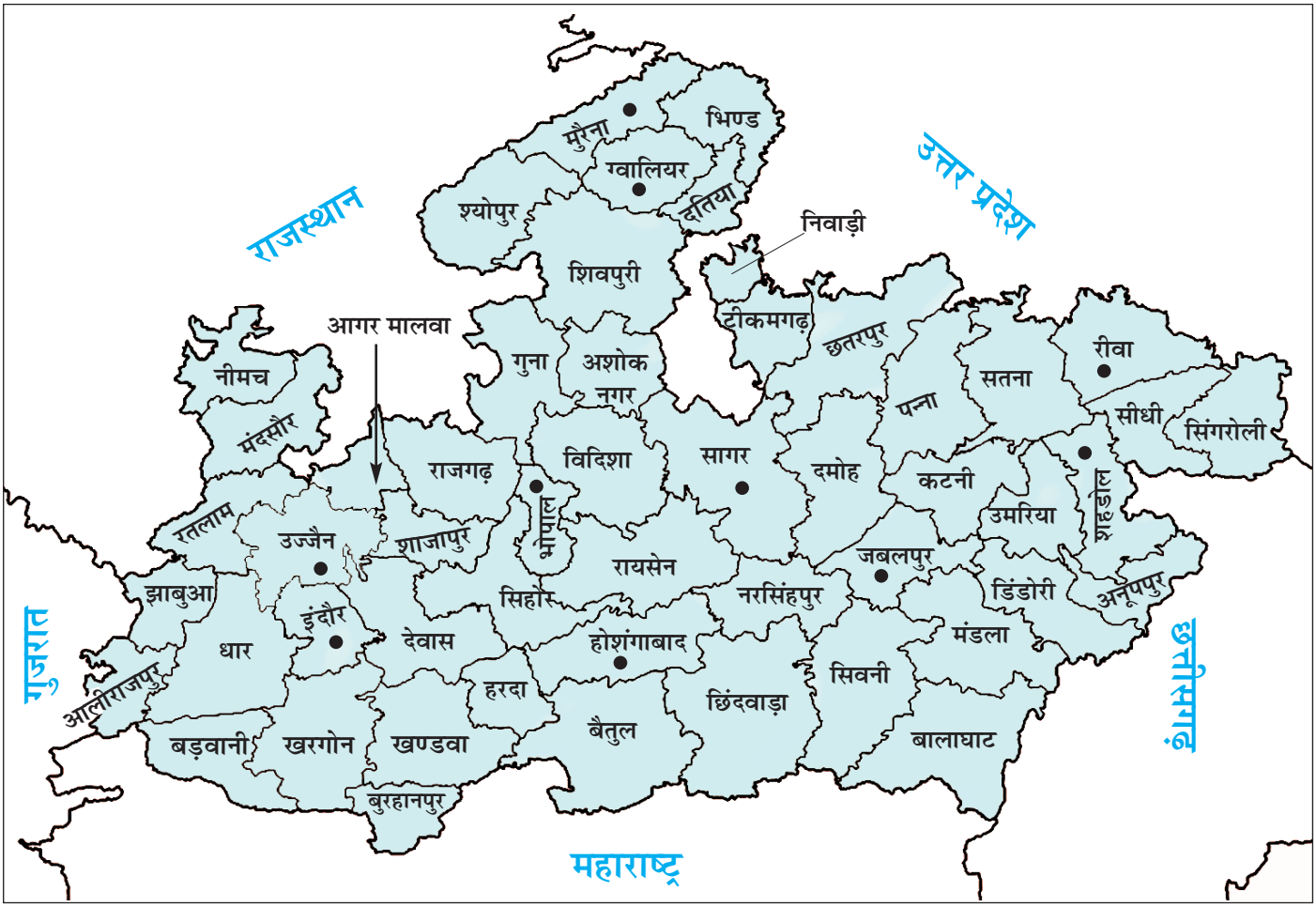

मध्य प्रदेश भारत की प्राचीनतम् धरातलीय संरचनाओं से निर्मित है, जिसमें आद्य महाकल्प से लेकर नवीनतम कल्प तक की चट्टानें पाई जाती हैं। मध्य प्रदेश में पाई जाने वाली चट्टानों, मिट्टियों, नदियों तथा जलवायु आदि के आधार पर मध्य प्रदेश को भौगोलिक दृष्टि से प्रमुख रूप से 03 भागों में विभाजित किया जा सकता है –

मध्य प्रदेश का भौगोलिक विभाजन

मध्य उच्च प्रदेश
- मालवा का पठार
- मध्य भारत का पठार
- बुन्देलखण्ड का पठार
- रीवा पन्ना का पठार
- नर्मदा सोन घाटी

सतपुड़ा श्रेणी प्रदेश
- पश्चिमी सतपुड़ा श्रेणी
- पूर्वी सतपुड़ा श्रेणी
- मैकाल श्रेणी

पूर्वी पठार
- बघेलखण्ड का पठार

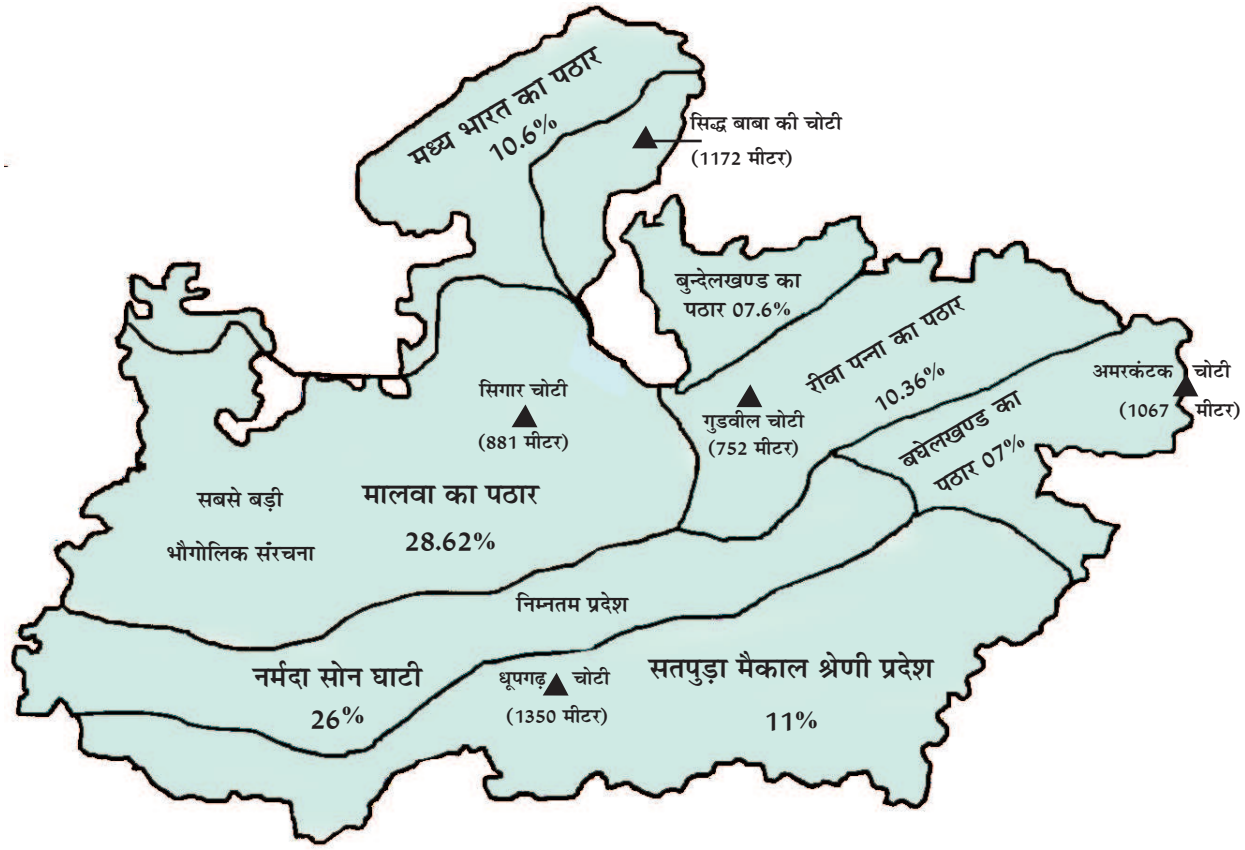

❐ मालवा का पठार

मालवा का नामकरण अत्यंत प्राचीन मलव जाति के नाम पर हुआ, मलव जाति का सर्वप्रथम उल्लेख ईपू 5वीं सदी में मिलता है, जो मूलत: पंजाब तथा राजपूताना क्षेत्र के थे। सिकंदर के आक्रमण के बाद यह अवंति व आसपास के क्षेत्र में आकर बस गए। मालवा के पठार की भौगोलिक विशेषताओं को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत देख सकते हैं –

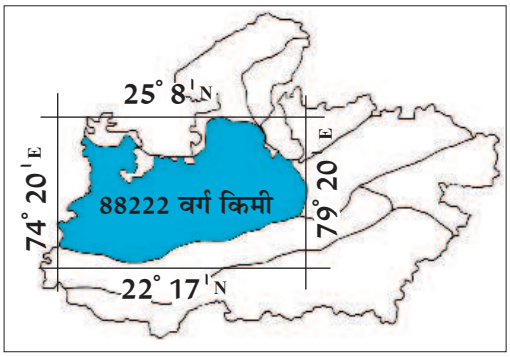

स्थिति – मालवा का पठार मध्य प्रदेश के पश्चिम में स्थित है, जिसके उत्तर में मध्य भारत का पठार पूर्व में बुन्देलखण्ड व रीवा पन्ना का पठार तथा दक्षिण में नर्मदा सोन घाटी स्थित है।

क्षेत्रफल – मालवा का पठार मध्य प्रदेश के कुल क्षेत्रफल के लगभग 28 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है।

औसत ऊँचाई – मालवा के पठार की औसत ऊँचाई लगभग 300-600 मीटर है। इस प्रदेश की सबसे ऊँची चोटी सिगार की चोटी (881 मीटर) है। इसके अतिरिक्त जानापाव (854 मीटर) तथा धजारी अन्य चोटियां हैं।

जिले – इस पठार के अन्तर्गत मध्य प्रदेश पश्चिम में स्थित लगभग 18 जिले पूर्णत: या आंशिक रूप से आते हैं, जिनमें इन्दौर, उज्जैन, भोपाल, मंदसौर, रतलाम, अशोकनगर, आगर-मालवा, देवास, धार, झाबुआ, अलीराजपुर, शाजापुर, विदिशा, गुना, राजगढ़, सीहोर, रायसेन तथा सागर जिले प्रमुख हैं।

निर्माण – इस पठार का निर्माण दक्कन ट्रेप की लावा तथा बेसाल्ट चट्टानों के स्तरीकरण से हुआ।

जलवायु – इस प्रदेश में सम जलवायु पाई जाती है। यहां न तो ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी और न ही शीत ऋतु में अधिक ठण्ड पड़ती है। मालवा की जलवायु को फाह्यान ने श्रेष्ठ जलवायु कहा है।

वर्षा – इस क्षेत्र में लगभग 50-75 सेमी वर्षा होती है।

मिट्टी – इस पठार का निर्माण चूंकि लावा तथा बेसाल्ट चट्टानों से हुआ है। इसी कारण इस क्षेत्र में मुख्यत: काली मिट्टी पाई जाती है।

नदियां – इस क्षेत्र की प्रमुख नदियां चम्बल, क्षिप्रा, पार्वती, कालीसिंध, बेतवा, माही आदि हैं।

वन – इस क्षेत्र का पश्चिमी भाग वनों के दृष्टिकोण से लगभग शून्य है, फिर भी पूर्वी भागों में कुछ मात्रा में सागौन, साल तथा तेंदूपत्ता जैसे वन पाए जाते हैं।

फसल – इस क्षेत्र की फसलों में सोयाबीन, कपास, गेहूं, ज्वार तथा मूंगफली प्रमुख हैं।

उद्योग – मालवा का पठार उद्योगों की दृष्टिकोण से काफी सम्पन्न है। नागदा में कृत्रिम रेशा उद्योग, इन्दौर में सूती वस्त्र उद्योग, सागर में स्टेनलेस स्टील, देवास में लेदर कॉम्प्लेक्स प्रमुख है। भारत का डेट्राइट कहा जाने वाला धार जिले का पीथमपुर इसी भाग में स्थित है। इसके अतिरिक्ति मंडीदीप, मेघनगर तथा पीलूखेड़ी अन्य औद्योगिक विकास केन्द्र हैं। इंदौर को सूती वस्त्र के कारण मध्य प्रदेश का मेनचेस्टर तथा व्यवसायिक एवं खेल राजधानी जैसे उपनामों से भी जाना जाता है।

पर्यटन – इस क्षेत्र के प्रमुख दर्शनीय स्थल माण्डू, उज्जैन, सांची, भीमबेटका व उदयगिरि की गुफाएं आदि हैं।